WJ2 (11)

मेरी यादों के दरवाज़े पर....

सुबह हो चुकी है। बसंत का मौसम। चारो ओर फूल खिले है और उनमें तितलियाँ और फूलों में बरफीले बूँदे है। आसमान नीली और चमकीली। ठंडाहक भरी धीमी हवा में फूल और घास नाच रहे है। चिड़ियों के चिनचिनाहट में मीनू की आँखे धीरे खुलने लगी। मीनू अपने बिस्तर से उठी और सीधा अपने खिडकी के पास जाकर खडी हुई। हवा के ठंडाहक और चिडियों के चिनचिनाहटों में खो चुकी थी।

घडी बजी... उसके होश आए। उसने देखा आठ बज गए। उसने सीधा नहा-धोने गई। वो अपनी खिडकी बंद करना भूल गई थी। वो नास्ता करने बैठी। उसने अपनी बेटी को भी बुलाया। "अकीला बेटी आओ चलो नास्ता करो वरना स्कूल के लिए देर हो जाएगी"। अकीला भी अपने माँ के साथ नास्ता के लिए बैठ गई। उसने माँ को चिंतित देखकर पूछा "क्या हुआ माँ? आप इतनी चिंतित क्यू हो"? माँ ने कहा "कुछ नही बेटी।" नास्ता के बाद मीनू और अकीला अपने स्कूल के लिए निकल पडे।

अकीला और मीनू जबलपुर के धन्वंत्री नगर में रहते है। अकीला वही के नालंदा पब्लिक स्कूल के पाँचवी कक्षा कि विद्यार्थिनी है। मीनू वही स्कूल में अध्यापिका है। अकीला बहुत प्यारी

है। वो बहुत अच्छे से पढ़ती भी थी। स्कूल के सभी उसे बहुत पसंद करते थे।

दुर्गापूजा का समय। रात को अकीला के पिताजी अपने के बाद वो दुर्गापूजा देखने गए। ~~अक~~ उनने बाहर से खाना भी खा लिया था। वो एक, दो बजे ही घर पहुँचे। अकीला बहुत थी। रात आते वक्त उसने माता-पिता दोनो से पूछा "आपलोगो को क्या हुआ इतने उदास क्यों हो?"... दोनो कुछ नही बोले उन्होने सिर्फ इतना कहा "बेटी तुम सो जाओ"।

अगली सुबह। अकीला हर रोज़ की तरह स्कूल के लिए तैयार हो गई। तभी उसके चाचाजी घर पर आए। उसने दौड़ते हुए जाकर अपने ~~च~~ चाचाजी के गोद में बैठी। चाचाजी ने उसकी उसकी मन पसंद मिठाई भी खिलाया। उसने चाचाजी के कानों में जाकर पूछा "चाचू ये ~~अम्मा~~ माँ और पापा को क्या हुआँ? दोनो कल से बहुत उदास थे"। चाचू पहले तो कुछ नही बोले पर अकीला के जिद की वजह से उन्हे यह कहना पड़ा कि पापा का काम छूट चुका है और वो ही नही की उनके घर भी नही रहेगा। अकीला छोटी थी इसलिए उसे ज़्यादा कुछ नही समझ आया फिर भी उसे पता चला की अब वो ~~इसकी~~ अपनी यह वही घर में नही रह पाएगी।

अकीला उस दिन स्कूल नही गई। दोपहर को बैंक वाले आये और अकीला के पापा से कहा "आप को इस घर से निकलना है"। यह सुनते ही माँ जम कर रो रही थी। माँ की रुलावट देखकर अकीला के आँखो में भी आसू भर गए। अकीला अपने चाचू के ~~ग~~ गोद में बैठी हुई थी

उनको घर से निकलना पड़ा। वो सीधा चाचू के घर गए। मीनू को उस स्कूल से हटाया गया। क्योंकि फीस के कारण उन्होंने अकीला को भी हटाया। अब वो एक साधारण और छोटे स्कूल में पढ़ती थी। पहले तो उसे वह स्कूल पसंद नहीं था पर अब उसे वह स्कूल पसंद था। मीनू तो नौकरानी के काम करने लगी और अकीला के पिता बीमार पड़ गए। वो एक छोटे घर में रहते थे। अकीला स्कूल से वापस आई और दरवाजा खोली। अकीला के चिल्लाहट सुनकर पड़ोसी दौड़ आए। उन्होंने देखा मरे हुए अकीला के पिताजी को। उनमें से एक पड़ोसी मीनू बुला लाए। अंतिम संस्कार पूरा हो गया था। अब बेचारी अकीला और माँ अकेले हो गए।

सालों बीत गए।..... । आज अकीला एक बड़ी सी कंपनी की मैनेजर है। उसका अब शादी शुदा सब हो चुका है। अब वो मुंबई में रहती है। उसके माँ के इच्छा प्रकार वो जबलपुर आई। उसका अब वहा एक बड़ा घर है। वो सभी वही रुकते हैं। दो दिन बीत गए। अकीला नहा-धोकर आई। अपने माँ के पास गई और उनके लिए नए कपड़े दिए। आज उनका जन्मदिन है।

समय साढ़े आठ बज गए। अकीला अपने माँ के साथ मंदिर निकली। मीनू बहुत खुश थी, क्योंकी आज तक उसने उनकी जन्मदिन याद तक नहीं था पर आज..... उनका मन खुशी से भर गया। मंदिर से गाड़ी आगे चली पर घर कि ओर नहीं। माँ ने अकीला से पूछा "बेटी

हम कहा जा रहे हैं"? अकीला ने कहा "बस माँ आप बैठी रहो हम बस अभी पहुँच जाएँगे"। उनकी कार एक गेट के अंदर घुसी। अकीला ने कार से बाहर उतरने के बाद किसी से बात किया और माँ को कार से उतरवाया। उन्होने वहा रखी बोर्ड को पढा "वृद्ध" "वृद्धालय"..। उनने कुछ नही कहा बल्की सिर्फ अपने बेटी के ओर देखा। उनके उस नज़र में बहुत सी सवाल थे।

अकीला कार लेकर निकली। पता नही की उसे क्या हुआ पर उसके दिमाग में सिर्फ माँ का चेहरा आने लगा। कार चलाते वक्त उसकी आँखे उसकी पुरानी स्कूल पर अटकी। उसके मन में उसके स्कूल के पहले दिन की याद आई... उसने थोडी दूर कार रोकने के बाद फिर आगे चली...

आखिर वह पहुँची वहा पर जहाँ उसकी पापा सो रहे है। उसके मन ने उन यादों का दरवाज़ा खोला. वो सीधे गई वापस... गई अपने माँ के पास और उनके पैर पडी। "माँ मुझे माफ करो.....।

अकीला की अपने उस यादो से यादों ने उसका दिल खोला। आज हमारे समाज में वृद्धालय बढ़ते जा रहे है। काश वो बच्चे भी अपने बचपन के यादो भरी दिल का दरवाजा खोलते और समझते कि अपने माता पिता का लाड प्यार.. ऐसे छोटे यादों के बहमें रोक सकते है, ऐसे अनीती करने से।